दृष्टि
The Vision

हिन्दी साहित्य

HINDI LITERATURE

टेस्ट-IV (प्रश्नपत्र-2)

DTVF/18(JS)–HL-**HL4**

निर्धारित समय: तीन घंटे *Time allowed: Three Hours*	अधिकतम अंक: 250 *Maximum Marks: 250*

नाम (Name): Jagdish Bangarwa

क्या आप इस बार मुख्य परीक्षा दे रहे हैं? | हाँ | ✗ | नहीं | ✓ |

मोबाइल नं. (Mobile No.):

ई-मेल पता (E-mail address):

टेस्ट नं. एवं दिनांक (Test No. & Date): 4 17 july 2018

रोल नं. [यू.पी.एस.सी. (प्रा.) परीक्षा-2018] [Roll.No. UPSC (Pre) Exam-2018]: 0 0 Q 0 0 Q 0

विद्यार्थी के हस्ताक्षर (Student's Signature): [signature]

Question Paper Specific Instructions

Please read each of the following instruction carefully before attempting questions:

*There are **EIGHT** questions divided in **TWO SECTIONS.***

*Candidate has to attempt **FIVE** questions in all.*

*Questions no. 1 and 5 are compulsory and out of the remaining, any **THREE** are to be attempted choosing at least **ONE** question from each section.*

The number of marks carried by a question/part is indicated against it.

*Answer must be written in **HINDI** (Devanagari Script).*

Answers must be written in the medium authorized in the Admission Certificate which must be stated clearly

Word limit in questions, wherever specified, should be adhered to.

Attempts of questions shall be counted in sequential order. Unless struck off, attempt of a question shall be counted even if attempted partly. Any page or portion of the page left blank in the Question-cum-Answer Booklet must be clearly struck off.

कुल प्राप्तांक (Total Marks Obtained): ______ टिप्पणी (Remarks): ______

मूल्यांकनकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर) *Evaluator (Code & Signatures)*	पुनरीक्षणकर्त्ता (कोड तथा हस्ताक्षर) *Reviewer (Code & Signatures)*

मूल्यांकन की पद्धति

प्रिय अभ्यर्थियो,

आपकी उत्तर-पुस्तिकाओं का मूल्यांकन करते हुए परीक्षक-समूह के सदस्य निम्नलिखित निर्देशों का ध्यान रखते हैं। आप भी इन्हें ध्यान से पढ़ें ताकि आप अपने प्राप्तांकों का तार्किक कारण समझ सकें।

परीक्षकों के लिये निर्देश

1. मूल्यांकन में अंकों का वही स्तर रखा जाना चाहिये जैसा संघ लोक सेवा आयोग (UPSC) के परीक्षकों द्वारा रखा जाता है।
2. सामान्य अध्ययन का जो उत्तर हर दृष्टिकोण से सटीक व उत्कृष्ट है; उसे अधिकतम 60% अंक दिये जाने चाहियें क्योंकि आयोग द्वारा किये जाने वाले मूल्यांकन में भी इससे अधिक अंक मिलना लगभग असंभव है। वैकल्पिक विषयों के उत्कृष्ट उत्तरों तथा श्रेष्ठतम निबंधों में अधिकतम 70% तक अंक दिये जा सकते हैं।
3. कृपया अंकों का वितरण निम्नलिखित तालिका के अनुसार करें-

उत्तर का स्तर (Standards of Answer)	सामान्य अध्ययन में अंक-स्तर (Marks Standard G.S.)	वैकल्पिक विषय तथा निबंध में अंक-स्तर (Marks Standard - Optional Subject and Essay)
उत्कृष्ट (Excellent)	51-60%	61-70%
बहुत अच्छा (Very Good)	41-50%	51-60%
अच्छा (Good)	31-40%	41-50%
औसत (Average)	21-30%	31-40%
कमज़ोर (Poor)	0-20%	0-30%

4. कृपया उत्तर में निम्नलिखित गुणों को विशेष प्रोत्साहन दें-
   - प्रश्न की सटीक समझ व उत्तर की व्यवस्थित रूपरेखा
   - संक्षिप्त, टू-द-पॉइंट लेखन शैली
   - प्रामाणिक तथ्यों का समुचित उपयोग
   - अधिकतम ज़रूरी बिंदुओं का समावेश
   - सरकारी दस्तावेजों (मंत्रालयों/आयोगों की रिपोर्ट्स, पॉलिसी पेपर्स आदि) के संदर्भों की चर्चा
   - प्रभावी भूमिका व निष्कर्ष
   - समकालीन घटनाओं/प्रसंगों को उत्तर से जोड़ना
   - दृष्टिकोण में संतुलन, समावेशन व गहराई
   - अच्छी, साफ-सुथरी हैंडराइटिंग
   - भाषा में प्रवाह
   - आवश्यकतानुसार डायग्राम्स, नक्शों आदि का प्रयोग
   - तकनीकी शब्दावली का सटीक उपयोग
   - सुंदर प्रस्तुति शैली (छोटे पैराग्राफ्स रखना, महत्त्वपूर्ण शब्दों को अंडरलाइन करना आदि)
   - विराम चिह्नों का समुचित प्रयोग
   - भाषा में वर्तनी व व्याकरण की शुद्धता
5. टॉपर्स के अनुभव बताते हैं कि उत्तर की विषयवस्तु अच्छी होने पर आयोग के परीक्षक शब्द-सीमा के थोड़े बहुत उल्लंघन पर अंक नहीं काटते हैं। कृपया आप भी इसी दृष्टिकोण के अनुसार अंक-निर्धारण करें।

Method of Evaluation

Dear Candidates,

While assessing your answer-scripts, the evaluators are required to follow the given instructions. You should also read them carefully to understand the logic behind the marks obtained by you in the tests.

Instructions for the Evaluators

1. The level of marks while evaluating the answers should be kept as per UPSC (Union Public Service Commission) standards as far as possible.
2. The answers of General Studies which are accurate and excellent from every perspective should be awarded a maximum of 60% marks as it is almost impossible to get more than that in actual UPSC examination. Excellent answers in optional subjects and the best written essays can be awarded a maximum of 70% marks.
3. Please assign the marks according to the following table-

4. Please devote special attention to the following qualities in an answer–
   - Accurate understanding of the question and systematic presentation of the answer
   - Crisp and to the point writing style
   - Adequate use of authentic facts
   - Inclusion of all the important points
   - Citing of relevant facts and figures from relevant official documents (Ministries /Commissions Reports, Policy Papers etc.)
   - Effective introduction and conclusion
   - Linking of current events and situations with the answer
   - Balance and depth in answer-writing
   - Legible and clean handwriting
   - Flow of language
   - Use of diagrams, maps etc
   - Precise use of technical terminology
   - Beautiful presentation style (small paragraphs, underlining important words etc.)
   - Proper use of punctuations
   - Correct spellings and right use of grammar
5. Experience of UPSC toppers also indicates that if the content of the answer is good, the UPSC examiners do not cut the marks on slight violations of the word-limit. Please award marks strictly according to the above-mentioned instructions.

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–A

1. निम्नलिखित काव्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) चकवी बिछुटी रैणि की, आइ मिली परभाति।
जे जन बिछुटे राम सूं, ते दिन मिले न राति।।

संदर्भ - प्रस्तुत काव्यांश भक्तिकाल में राम भक्ति काव्यधारा के शीर्ष कवि तुलसीदास द्वारा रचित रामचरितमानस से उद्धृत है।

व्याख्या - तुलसीदास जी कहते हैं कि रात में बिछुड़ी हुई चकवा पक्षी तो प्रातः होने पर अपने प्रिय से मिल जाती है किन्तु जो लोग राम से बिछुड़ गए हैं उनका राम से मिलन होना असंभव है वे न तो रात में और न ही दिन में राम से मिल पाते हैं।

विशेष - उपर्युक्त पंक्तियों में तुलसी की भक्ति भावना अपने चरम रूप पर उभरी है जिसमें वे राम से न बिछुड़ने की कामना कर रहे हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ख) दूर करहु बीना कर धरिबो।
मोहे मृग नाहीं रथ हाँक्यो, नाहिंन होत चंद को ढरिबो।।
बीती जाहि पै सोई जानै कठिन है प्रेमपास को परिबो।
जब तें बिछुरे कमलनयन, सखि, रहत न नयन नीर को गरिबो।।
सीतल चंद अगिनि सम लागत कहिए धीर कौन बिधि धरिबो।
सूरदास प्रभु तुम्हारे दरस बिनु सब झूठो जतननि को करिबो।।

संदर्भ - उपर्युक्त पंक्तियाँ हिन्दी में भक्तिकालीन कृष्ण भक्त कवि सूरदास की ~~कविता~~ रचना 'सूरसागर' से उद्धृत है।

व्याख्या - गोपियाँ कहती है कि कृष्ण ने हमें अपने से दूर कर दिया है। हमारा जीवन दुखार हो गया है। जब से कमल नयन रूपी कृष्ण बिछुड़े है तब से आँखों का पानी भी नहीं रहने लगा है। शीतल चाँदनी भी हमें अग्नि की तरह लगती है। प्रभु के दर्शन बिना जब प्रयत्न झूठे लगते है।

विशेष - ब्रज भाषा का सुन्दर चित्रण।
- विप्रलंभ श्रृंगार का चरम निदर्शन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) है अमानिशा, उगलता गगन घन अंधकार
खो रहा दिशा का ज्ञान, स्तब्ध है पवन चार,
अप्रतिहत गरज रहा पीछे अम्बुधि विशाल
भू-धर ज्यों ध्यान-मग्न, केवल जलती मशाल।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य के महाप्राण कवि सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला' की कालजयी कृति 'राम की शक्तिपूजा' से उद्धृत हैं।

प्रसंग - इन पंक्तियों में कवि ने प्रकृति के प्रतीकों के माध्यम से हताश राम की मनोदशा का चित्रण किया है।

व्याख्या - कवि वर्णन करते हैं कि अमावस्या की रात्रि में आसमान घना अँधेरा उगल रहा है तथा ऐसे में दिशा का भी ज्ञान नहीं हो पा रहा है। पवन रुकी हुई है तथा पीछे विशाल सागर में लहरें उठ रही हैं। ऐसे में एक पर्वत के समान ध्यानमग्न राम बैठे हैं और एक मशाल जल रही है। यह राम की मनोदशा का चित्रण है जिसमें उनके मन में पराजय का अंधकार छा

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

गया है तथा सफलता की दिशा नहीं मिल रही है। उनके शांत चेहरे के पीछे मन में चिंता का सागर उमड़ रहा है तथा फिर भी उनके मन में एक आशा की किरण रूपी मशाल जल रही है।

विशेष - निराला ने प्रकृति के प्रतीकों से राम की मनोदशा का सटीक चित्रण किया है।

· बिम्बों का प्रयोग सराहनीय है इसीलिए कहा गया है कि दिन के उजाले में बिम्ब खींचने वाले कवि तो बहुतेरे हुए किंतु रात के अंधेरे में बिम्बों की क्षमता मुक्तिबोध और निराला के पास ही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) श्रेय नहीं कुछ मेरा,
मैं तो डूब गया था स्वयं शून्य में–
वीणा के माध्यम से अपने को मैंने,
सब-कुछ को सौंप दिया था–
सुना आप ने जो वह मेरा नहीं,
न वीणा का था:
वह तो सब-कुछ की तथता थी
महाशून्य
वह महामौन
अविभाज्य, अनाप्त, अद्रवित, अप्रमेय
जो शब्दहीन
सब में गाता है।

संदर्भ - उपर्युक्त पंक्तियाँ हिन्दी कविता में प्रयोगवाद के पुरोधा और नई कविता के सशक्त कवि सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय' द्वारा रचित कविता 'असाध्य वीणा' से उद्धृत है।

व्याख्या - प्रियंवद कहता है कि इस वीणा को बजाते में मेरी भूमिका शून्य हो मैं तो स्वयं शून्य अर्थात् ब्रह्म में डूब गया था। वीणा के कृति में ब्रह्म से एकाकार हो गया था। वीणा के स्वर न तो वीणा के थे और न ही मेरे थे। वे तो ब्रह्म की शब्द

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें। (Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें। (Please don't write anything in this space)

की अभिव्यक्ति थी। वह महामौन है लेकिन उसी में सब ध्वनियाँ आविर्भूत और तिरोभूत होती हैं।

विशेष. बौद्ध दर्शन के जापानी संस्करण ज़ेन बुद्धिज़्म का निदर्शन

- योगाचार विज्ञानवाद के तथा माध्यमिक शून्यवाद के शून्य की व्याख्या।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ङ) भर भादौं दूभर अति भारी। कैसें भरौं रैनि अँधियारी।
मँदिल सून पिय अनतै बसा। सेज नाग भै धै धै डसा।
रहौं अकेलि गहें एक पाटी। नैन पसारि मरौं हिय फाटी।
चमकि बीज घन गरजि तरासा। बिरह काल होइ जीउ गरासा।
बरिसै मघा झँकोरि झँकोरी। मोर दुइ नैन चुवहिं जसि ओरी।
पुरबा लाग पुहुमि जल पूरी। आक जवास भई हौं झूरी।

संदर्भ - उपर्युक्त काव्यांश मध्यकालीन सूफी कवि मलिक मुहम्मद जायसी की रचना 'पद्मावत' के नागमती विरह खंड से उद्धृत है।

प्रसंग - नागमती के बारहमासा विरह वर्णन में भाद्रपद मास का वर्णन किया गया है।

व्याख्या - भाद्रपद की अंधेरी रात में कैसे काटा जाए। सोने की सेज प्रिय के बिना सर्पदंश के समरूप लगती है। मेरी स्थिति तो हृदय के कटने से आँख की पड़ी लाश के समान होने को है। बादलों के गरजने तथा विद्युत के कड़कने से मेरा मन घबराता है। मेरी आँखों से भी आँसुओं के रूप में वर्षा हो रही है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

विशेष - चौपाई छंद
- अवधी की ठेठ मिठास
- बारहमासा वर्णन

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

2. (क) 'राम की शक्ति-पूजा' के आधार पर निराला की भक्ति-चेतना पर प्रकाश डालिये। 20

राम की शक्ति पूजा एक सश्लिष्ट अर्थ विधान की कविता है जिसमें निराला का आत्मसंघर्ष, सीता की मुक्ति, सत -असत का शाश्वत संघर्ष, शक्ति की मौलिक कल्पना, निराला की भक्ति चेतना इत्यादि कई अर्थ आपस में गुँथे हैं।

विश्वम्भर मानव जैसे कुछ आलोचकों ने शेष सभी संवेदनाओं को गौण मानते हुए 'राम की शक्ति पूजा' को निराला की भक्ति का माध्यम माना है।

उनके अनुसार निराला आधुनिक कवि हैं तथा इसके कारण उनके राम ईश्वर न होकर मानव हो गए हैं तथा उनमें मानवोचित कमजोरियाँ आ गई हैं।

'स्थिर राघवेन्द्र को हिला रहा फिर-फिर संशय
रह रह का उठता जगजीवन में रावण जय -भय"

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright - Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

निराला मूलतः वैष्णव परम्परा के कवि है इसलिए उन्होंने स्वाभाविक तौर पर राम को अपने आराध्य के रूप में चुना। निराला का सम्बन्ध बंगाल से भी रहा है इसकारण उन्होंने राम को शक्ति (दुर्गा) की पूजा करते हुए चित्रित किया है साथ ही शैव परम्परा के निर्वाह हेतु राम को शिव का भक्त एवं शक्ति को ~~राम~~ शिव के अधीन बतलाया है।

निराला वेदान्त दर्शन से काफी प्रभावित रहे तथा वेदान्त दर्शन के ही दार्शनिक विवेकानन्द उनके आदर्श रहे हैं। इसी कारण निराला ने प्रकृति को अत्यधिक महत्व देते हुए शक्ति को प्राकृतिक तत्वों में निहित बतलाया है।

इसके अतिरिक्त निराला अपने प्रिय कवि तुलसीदास का भी भक्ति भावना में अतिक्रमण करते हैं तथा योग ~~तथा~~ व भक्ति में समन्वय करते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

ध्यातव्य है कि तुलसीदास समन्वय की विराट चेतना के साथ पैदा हुए थे किन्तु योग के मामले में वे सहज समन्वय नहीं कर पाते -

गोरख जगायो जोग, भगति भगायो लोग

निराला ने हनुमान में योगी तथा भक्ति दोनों बतलाते हुए उन्हें 'अस्ति - नास्ति' दोनों विशेषों का वाहक सिद्ध किया।

वस्तुतः राम की शक्तिपूजा की कई संवेदनाओं में से एक संवेदना 'निराला की भक्ति-चेतना' भी है किन्तु इसे एकमात्र संवेदना नहीं माना जाना चाहिए।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिये, उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिये।' इस पंक्ति के आलोक में भारत-भारती का मूल्यांकन कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

भारत भारती अपने मूल रूप में एक उद्बोधन काव्य है जिसमें गुप्त जी सुषुप्त भारतीय जनमानस को प्राचीन गौरव की याद दिलाकर जागृत करना चाहते हैं।

इस जागरण की प्रक्रिया में गुप्त जी समाज के प्रत्येक वर्ग को उसके दायित्व का बोध कराते हैं और इसी क्रम में वे कवियों को उनके कर्तव्य याद दिलाते हुए कहते हैं कि

केवल मनोरंजन न कवि का कर्म होना चाहिए।
उसमें उचित उपदेश का भी मर्म होना चाहिए।

दरअसल गुप्त जी ने भारत - भारती में भारतवर्ष के अतीत, वर्तमान तथा भविष्य खंडों का क्रमशः विश्लेषण किया है और अतीत खंड के वैभव को नष्ट करने के उत्तरदायी कारणों की पड़ताल करते हुए वे पाते हैं कि रीतिकालीन कवियों ने समाज

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

को नवीन युग दृष्टि देने की बजाय भोग-विलास तथा श्रृंगारिक क्रीड़ाओं का महिमामंडन किया। इस कारण समाज के अंधेरे को दूर करने की दृष्टि नदारद रही।

भविष्य काल में उन्होंने वर्तमान की समस्याओं के समाधान के संकेत देते हुए लिखा है कि भारतीयों को अब जाग जाना चाहिए तथा स्वदेशी उत्पादन क्षमताओं का विकास करना चाहिए। वे लिखते हैं -

अब तो उठो हे बन्धुओं निज देश की जय बोल दो।
बनें यहाँ वस्तुएँ सभी, कल-कारखाने खोल दो।
जावे ~~यह~~ यहाँ अब और कच्चा माल नहीं
हो 'मेड इन' के बाद बस अब 'इंडिया' ही सब कहीं।

इसी क्रम में गुप्त जी ने कवियों को भी अपनी दायित्व चेतना का बोध करवाया है तथा राष्ट्रभाषा की आवश्यकता पर

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

मंथन किया है।

भारत-भारती वास्तव में भारतीयों के उद्बोधन का लक्ष्य लेकर चली है और उस दृष्टि से कवि की उपर्युक्त पंक्तियाँ भारतीयों को अपने उत्तरदायित्वों का अहसास कराने में सफल रही है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) 'कामायनी' बिंब-विधान की दृष्टि से एक सफल कृति है।' क्या आप इस कथन से सहमत हैं। सोदाहरण उत्तर दीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कामायनी हिन्दी साहित्य में अपने कथ्यगत सौन्दर्य के साथ-साथ शिल्पगत वैशिष्ट्य को लेकर भी प्रतिष्ठित रही है। कामायनी में छायावादी शिल्प की सभी प्रवृत्तियाँ यथा - तत्समीकृत शब्दावली, भाषा का समास गुण, नवीन अलंकार, कोमल एवं सुकुमार बिम्ब तथा विशिष्ट उपमान योजना, अपने चरम रूप पर दिखती है।

कामायनी में बिम्बों की एक शृंखला सी है जिसके माध्यम यह पाठ्य वस्तु के माध्यम पर ऐन्द्रिक अनुभूति का काव्य बन जाती है।

कामायनी में मौजूद बिम्बों का आदान निम्न पंक्तियों में देखा जा सकता है जहाँ चिन्तामग्न मनु की छवि आँखों में खिंच जाती है

हिमगिरि के उत्तुंग शिखर पर वेदशिला की शीतल छाँह
एक पुरुष भीगे नयनों से देख रहा था प्रलय प्रवाह

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कामायनी में न केवल एकल बिम्ब बल्कि कई स्थानों पर संश्लिष्ट बिम्ब भी मौजूद है जो जो एकाधिक ज्ञानेन्द्रियों के स्तर पर सक्रिय होते हैं-

दिग्दाहों से धूम उठे या जलधर उठे क्षितिज तट के
सघन गगन में भीम प्रकंपन, झंझा के चलते झटके।

बिम्बों का एक वर्गीकरण अन्य प्रकार से भी किया जाता है - लक्षित और उपलक्षित बिम्ब। लक्षित बिम्ब उन बिम्बों को कहा जाता है जो हमें सामान्य जीवन में नजर आते हैं।

तथा उपलक्षित बिम्ब उन बिम्बों को कहा जाता है ~~जिनमें~~ अमूर्त विचारों या संवेदनाओं को उपमाओं का प्रयोग कर मूर्त रूप दे दिया जाता है। उपलक्षित बिम्ब का एक सुंदर उदाहरण निम्न है-

कामायनी कुसुम वसुधा पर पड़ी न वह मकरंद रहा,
एक चित्र बस रेखाओं का अब उसमें है रंग कहाँ।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इस प्रकार कामायनी निम्नों का जीव संग्रह है जिसमें विराट एवं कोमल, एकल एवं अश्लिष्ट, लक्षित एवं उपलक्षित जैसे निम्नों की एक जीवंत शृंखला है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Section–B

5. निम्नलिखित गद्यांशों की लगभग 150 शब्दों में ससंदर्भ व्याख्या कीजिये: $10 \times 5 = 50$

(क) जीना चाहते हो? कठोर पाषाण को भेदकर, पाताल की छाती चीरकर अपना भोग्य संग्रह करो; वायुमंडल को चूसकर, झंझा-तूफान को रगड़कर, अपना प्राप्य वसूल लो; आकाश को चूमकर, अवकाश की लहरों में झूमकर, उल्लास खींच लो।

संदर्भ - प्रस्तुत पंक्तियाँ हिन्दी के प्रगतिवादी लेखक यशपाल द्वारा रचित उपन्यास दिव्या से उद्धृत हैं। दिव्या में यशपाल ने भौतिकवादी मानवतावादी दृष्टि प्रक्षेपित की है।

व्याख्या - लेखक कहता है कि यदि तुममें जीवनेच्छा है तो कठोर पत्थरों को भेदकर तथा पाताल को चीरकर भी अपनी खाद्य सामग्री एकत्र करनी होगी। अपना अधिकार छीनकर लेना होगा तथा तमाम मुश्किलों व तूफानों से संघर्ष करके अपना अधिकार वसूल करो। आकाश को चूमकर तथा रिक्त स्थानों में झूलते हुए अपनी खुशियाँ तलाशो।

विशेष- लेखक जीवनेच्छा तथा जिजीविषा

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

कविता स्पष्ट करते हुए कह रहा है कि व्यक्ति को मुश्किलों से लड़ना अपना हक प्राप्त करना चाहिए।

- तत्सम शब्दावली तथा उपमानों से बेहतरीन प्रभाव उत्पन्न हुआ है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।

(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।

(Please don't write anything in this space)

(ख) कष्ट हृदय की कसौटी है, तपस्या अग्नि है। सम्राट! यदि इतना भी न कर सके तो क्या! सब क्षणिक सुखों का अंत है। जिसमें सुखों का अंत न हो, इसलिये सुख करना ही न चाहिये। मेरे जीवन के देवता! और उस जीवन के प्राप्य! क्षमा।

सन्दर्भ - प्रस्तुत गद्यांश हिन्दी के छायावादी रचनाकार जयशंकर प्रसाद के नाटक स्कंदगुप्त के अन्तिम हिस्से से उद्धृत है जहाँ देवसेना स्कंदगुप्त को अपना देवता मानकर भी उसके विवाह को इनकार कर देती है।

व्याख्या - देवसेना स्कन्दगुप्त को सम्बोधित करते हुए कहती है कि जीवन की चुनौतियाँ ही जीवन की कसौटियाँ है तथा तपस्या उसकी अग्नि है जिसमें मानव को परीक्षा देनी है। हे सम्राट! यदि इतनी भी पीड़ा न सह सके तो सब व्यर्थ है। सभी प्रकार के सुख क्षणिक है, कोई भी सुख शाश्वत नहीं। यदि सुख-दुःख से परे होना है तो सुखों की कामना ही नहीं करनी चाहिए अर्थात आनन्द की उपलब्धि करनी चाहिए।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

देवसेना स्कन्दगुप्त के विवाह प्रस्ताव को ठुकराते हुए कहती है कि मेरे इस जीवन के देवता और अगले जीवन के लक्ष्य! मुझे क्षमा करो।

विशेष:- इन पंक्तियों में प्रसाद ने अपने आनन्दवाद दर्शन का प्रक्षेपण किया है जो कुछ द्वैत के द्वैत से परे आनन्द की तलाश करता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ग) राजनीति साहित्य नहीं है, उसमें एक-एक क्षण का महत्त्व है। कभी एक क्षण के लिये भी चूक जाएँ तो बहुत बड़ा अनिष्ट हो सकता है। राजनीतिक जीवन की धुरी में बने रहने के लिये व्यक्ति को बहुत जागरूक रहना पड़ता है।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this sp

संदर्भ - उपर्युक्त पंक्तियाँ हिन्दी साहित्य की उपन्यासकार मन्नू भण्डारी के राजनीतिक उपन्यास 'महाभोज' से उद्धृत हैं। इन पंक्तियों में मन्नू जी ने सूक्ष्मता से राजनीति के सिद्धान्त समझाए हैं।

व्याख्या - राजनीति में हर एक घटना का तथा हर एक क्षण का महत्व होता है इसमें साहित्यिक भावुकता से काम नहीं चलता। यदि एक भी क्षण में सही निर्णय न होने पाए तो उसके परिणाम घातक हो सकते हैं। राजनीति में केन्द्र में बने रहने के लिए हर पल सावधान रहना पड़ता है।

विशेष - उपर्युक्त पंक्तियों में राजनीति की साहित्य से तुलना कर राजनीति के सन्दर्भ में सजगता की महत्ता स्थापित की गई है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(घ) बच्चों की शक्लें और शरारतें तो बहुत पहचानी सी लगती हैं पर गोलगप्पे खाती हुई उनकी मम्मी अजनबी है, क्योंकि उसकी आँखों में मासूमियत और गरिमा से भरा प्यार नहीं है। उसके शरीर में मातृत्व का सौंदर्य और दर्प भी नहीं है। उसमें सिर्फ एक खुमार है और एक बहुत बेमानी और पिटी हुई ललकार है; जिसे न तो नकारा जा सकता है और न स्वीकार किया जा सकता है।

संदर्भ - उपर्युक्त पंक्तियाँ राजेन्द्र यादव द्वारा संकलित कहानी संग्रह 'एक - दुनिया समानान्तर' में संकलित कमलेश्वर द्वारा रचित कहानी 'खोई हुई दिशाएँ' से उद्धृत है।

व्याख्या - पार्क में बैठी अधेड़ महिलाओं को देखकर कमलेश्वर टिप्पणी करते हैं कि बच्चों की बालसुलभ चेष्टाएँ तो स्वाभाविक लग रही हैं किन्तु उनकी माताओं के व्यवहार में कृत्रिमता नज़र आती है क्योंकि वे उम्र के ढल जाने के बाद भी यह स्वीकार करने को तैयार नहीं हैं कि उनका यौवन ढल चुका है। उनमें न तो गरिमा, मासूमियत है, न ही मातृत्व का सौंदर्य है। केवल उनमें चुक चुकी यौवन की ललकार शेष है।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशेष - यौवन के उत्तरार्द्ध में जा चुकी महिलाओं के मनोविज्ञान का वैज्ञानिक विश्लेषण किया गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ङ) मगर कोठरी में बैठने की देर थी कि आँखों से छल-छल आँसू बहने लगे। वह दुपट्टे से बार-बार उन्हें पोंछती, पर वे बार-बार उमड़ आते, जैसे बरसों का बाँध तोड़कर उमड़ आये हों। माँ ने बहुतेरा दिल को समझाया, हाथ जोड़े, भगवान का नाम लिया, बेटे के चिरायु होने की प्रार्थना की, बार-बार आँखें बन्द की, मगर आँसू बरसात के पानी की तरह जैसे थमने में ही न आते थे।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

संदर्भ –

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

6. (क) 'मैला आँचल' का नायक आप किसे मानते हैं? तार्किक उत्तर दीजिये। 20

मैला आँचल हिन्दी का प्रथम आंचलिक उपन्यास भी है और सर्वश्रेष्ठ भी। इसकी सर्वश्रेष्ठता का प्रमाण यह है कि यह आंचलिकता की सभी कसौटियों पर खरा उतरता है। इन कसौटियों में से एक कसौटी नायकत्व भी है।

मैला आंचल के मानवीय चरित्रों में नायक की तलाश करने पर हमारे मस्तिष्क में कालीचरण, बावनदास तथा डॉ. प्रशान्त जैसे दो-तीन नाम उभरते हैं।

कालीचरण मैला आंचल का महत्वपूर्ण पात्र है जो सोशलिस्ट पार्टी का कार्यकर्ता है तथा गाँव में समाजवादी क्रांति चाहता है। वह कहता है -

जात क्या है? जात दो ही है .. एक गरीब और दूसरी अमीर। खेलावन को ही देखो ... यादवों की बीजमीन हड़प रहा है आँख खोलकर देख लो दो ही जात है - अमीर और गरीब

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

किन्तु इसे नायक मानने में समस्या है क्योंकि रचना के अन्तिम हिस्से में वह गैर महत्वपूर्ण हो जाता है तथा कुछ खण्डों में तो गायब ही हो जाता है।

इस श्रृंखला में दूसरा नाम बालदेव का है जो कांग्रेस का कर्मठ कार्यकर्ता है। उसकी मान्यता है कि "भारतमाता अब भी रो रही है" वह मेरीगंज की स्थितियों को सुधारना चाहता है किन्तु अन्तत: अंचल ~~के~~ का कठोर यथार्थ उस पर भारी पड़ता है तथा उसकी दर्दनाक हत्या कर दी जाती है।

नायकत्व का तत्व डॉ. प्रशान्त में उपरी दोनों चरित्रों से ज्यादा मात्रा में दिखता है। डॉ. प्रशान्त अन्त तक मौजूद भी है और महत्वपूर्ण भूमिका में भी है। किन्तु कई स्थानों पर डॉ. प्रशान्त स्वयं ने यह ~~महसूस~~ कहा किया है कि वह इस अंचल की तुलना में कमजोर है-

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

" मैं साधना करना चाहता हूँ इस ग्रामवासिनी भारतमाता के मैले आँचल तले। मैं कम से कम एक ही बार के कुछ प्राणियों के मुरझाए ओठों पर मुस्कुराहट लौटा सकूँ।"

हम पाते हैं कि मैला आँचल में नायकत्व किसी मानवीय चरित्र में न होकर मेरीगंज नामक अंचल में विद्यमान है क्योंकि नायकत्व की आधुनिक परिभाषा के अनुसार नायक उसे माना जाना चाहिए जो किसी रचना के रसास्वादन के पश्चात् पाठक के मन में गहराई से धँसे।

मैला आँचल मेरीगंज के राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक वर्णनों से अट पड़ा है तथा भौगोलिक एवं सांस्कृतिक वर्णनों की तो उसमें बाढ़ सी आ गई है।

नायक जी हो नायक जी।
खोले देहो किवड़िया हो नायक जी ... जैसे

गीत तथा मैनचलन, आयोजन, प्रलोभन

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

जैसी शब्दावली मेटीगंज को पाठक की चेतना में मूर्त कर देती है अतः मैला आँचल का नायक 'अंचल' को ही मानना उचित होगा। वैसे भी रेणु ने भूमिका में लिखा है कि

"यह है मैला आँचल, एक आंचलिक उपन्यास xxx कथानक है पूर्णिया'

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) 'दिव्या' उपन्यास के महत्त्व पर प्रकाश डालिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

'दिव्या' यशपाल द्वारा 1945 में रचित एक मानववादी उपन्यास है जो आज तक नए-नए अर्थों में अपनी प्रासंगिकता को बनाए हुए है।

दिव्या की मूल संवेदना मानववादी दर्शन पर टिकी है। यशपाल मानव की क्षमताओं पर विश्वास करते हुए लिखते हैं कि 'मनुष्य भोक्ता नहीं कर्ता है, सम्पूर्ण माया मनुष्य की क्रीड़ा है'

यह दर्शन आज के समय में अधिक प्रासंगिक है क्योंकि मानव विविध प्रकार के दबावों के तहत स्वयं को असहाय महसूस करता है।

दिव्या का महत्व इसमें व्यक्त सामंतवादी मूल्यों के साथ भी है। यशपाल सामंतवादी बुनियादी मूल्यों का प्रक्षेपण करते हुए दिव्या में अलौकिक आस्थाओं पर चोट करते हैं तथा भौतिकवाद की स्थापना

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

करते हैं। लोकायत दर्शन का प्रतिनिधि मारिश कहता है -

"भाग्य का अर्थ है विवशता और कर्मफल का अर्थ है कष्ट और विवशता के कारण का अज्ञात। भद्र! इसके अतिरिक्त भाग्य और कर्मफल कुछ भी नहीं"

इसके अतिरिक्त दिव्या में वर्णव्यवस्था तथा दासव्यवस्था जैसी विषमतामूलक व्यवस्थाओं पर चोट की गई है जो आज के समय में प्रासंगिक हो उठती है।

वर्णव्यवस्था से पीड़ित पृथुसेन कहता है कि "जन्म का अपराध? यदि वह अपराध है तो उसका मार्जन किस प्रकार संभव है।"

दिव्या एक अर्थ में नारी की समर्पित उपन्यास है तथा नारी को एक स्वाभाविक मानव का दर्जा देते हुए उसकी निर्णय स्वतंत्रता पर बल देता है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिव्या का महत्व केवल उसकी अंतर्निहित संवेदना के ~~कारणों~~ कारण ही नहीं है बल्कि उसके उत्कृष्ट शिल्प के कारण भी है।

यशपाल ने इसके जटिल कथानक को बड़ी कुशलता से बाँधा है तथा बिखरने से बचा लिया है। मार्क्सवादी रचनाकार होने के बावजूद चरित्रों को अपने वैचारिक हस्तक्षेप से बचाया है तथा उनका स्वाभाविक विकास होने दिया है।

संभवतः इसी कारण दिव्या को 'झूठा सच' के साथ यशपाल के सर्वश्रेष्ठ उपन्यासों में से गिना जाता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) 'महाभोज' उपन्यास के महत्त्व पर विचार कीजिये।

महाभोज उपन्यास स्वातंत्र्योत्तर भारत की राजनीतिक विकृतियों को आधार बनाकर लिखा गया है जो अपने उद्देश्य, संवेदना तथा शिल्पगत सौन्दर्य के कारण हिन्दी उपन्यास परम्परा में महत्वपूर्ण पड़ाव माना जाता है।

महाभोज अपने समय के यथार्थ का सम्पूर्ण विश्लेषण करते हुए राजनीति, समाज तथा मध्यवर्ग की एक-एक परतें उघाड़ता चलता है।

राजनीतिक स्वार्थपरता, संवेदनहीन अवसरवादिता, दोगला व्यक्तित्व तथा भ्रष्टाचार जैसी समस्याएँ महाभोज में बड़े स्तर पर मौजूद हैं। मोटे तौर पर यह राजनीति की कुत्सितता पर ही बुना गया है। दोगले व्यक्तित्व के धनी दा साहब के सन्दर्भ में कहा गया यह कथन प्रासंगिक हो उठता है-

" बात को अपने से, अपने मन में होने वाली उथल-पुथल से भी मारकर कैसे किया जाता है- यह गुर कोई दा साहब से सीखे।"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

राजनीति के साथ-साथ महाभोज समाज की कुछ विशिष्ट समस्याओं पर भी प्रकाश डालता है, इस कारण इसका महत्व और भी बढ़ जाता है।

महाभोज में दत्ता बाबू के माध्यम से पत्रकारिता का वास्तविक चरित्र, महेश के माध्यम से मध्यवर्ग की निर्जीव किस्म की तटस्थता तथा शहर के अखबार प्रसंग से मध्यवर्ग की नपुंसक और क्षणिक संवेदनाओं को उजागर किया गया है।

थानेदार सत्ता का वास्तविक चरित्र बतलाता है तथा जोरावर, कुकुल बाबू, राव-चौधरी जैसे चरित्र लोकतंत्र का मखौल उड़ाते नजर आते हैं।

अपने कथ्यात्मक सौन्दर्य के साथ-साथ महाभोज अपने शिल्पगत सामर्थ्य के कारण भी ~~सबा~~ महत्वपूर्ण माना जाता रहा है।

महाभोज की देशज-तद्भव शब्दावली एवं

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

विशिष्ट प्रभाव पैदा करती है-

"कबहूँ-कबहूँ तो रातभर छटपट छटपट करे सरकार।"

मन्नू भण्डारी ने महाभोज में सघन इन्द्र योजना से जो नारकीय ~~महत्व~~ तनाव उत्पन्न किया है उसने इस उपन्यास को हिन्दी के शीर्ष उपन्यासों की पंक्ति में ला खड़ा किया है।

महाभोज ~~~~ हिन्दी के उन उपन्यासों में से है जो अपने समकालीन परम्पराओं का ~~अतिक्रमण~~ कर नवीन प्रतिमानों की रचना करने का साहस रखते हैं।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

8. (क) "लेखक ने कला के अनुराग से काल्पनिक चित्र में ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ का रंग देने का प्रयास किया है।"- दिव्या के संबंध में अपनी इस स्वीकारोक्ति के निर्वाह में यशपाल कहाँ तक सफल हुए हैं? युक्तियुक्त उत्तर दीजिये। 20

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

दिव्या उपन्यास बौद्धकालीन परिवेश को आधार बनाकर लिखा गया उपन्यास है तथा स्वाभाविक तौर पर एक ऐतिहासिक उपन्यास है। ऐतिहासिक उपन्यासों के दौर में एक प्रश्न उठता ही है कि उसमें इतिहास और कल्पना का अनुपात क्या है? इस प्रश्न के जवाब में यशपाल कहते हैं -

"दिव्या इतिहास नहीं, ऐतिहासिक कल्पना मात्र है। लेखक ने कला के अनुराग से काल्पनिक चित्र में ऐतिहासिक वातावरण के आधार पर यथार्थ का रंग देने का प्रयास किया है।"

स्पष्ट है कि दिव्या में इतिहास गौण है और कल्पना प्राथमिक। विश्लेषण करने पर हम पाते हैं कि दिव्या में इतिहास के नाम पर तीन-चार चरित्रों का तथा तीन ऐतिहासिक स्थलों का उल्लेख है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

पुष्यमित्र शुंग, मिलिंद, वृहद्रथ तथा महर्षि पतंजलि वे चार ऐतिहासिक पात्र हैं जो दिव्या में उपस्थित है। किन्तु ये चारों सूचित पात्र है। इनमें से एक भी पात्र दिव्या में सहभागी चरित्र के रूप में उपस्थित नहीं है।

मगध, सागल और मथुरा वे तीन स्थान हैं जो दिव्या में उल्लिखित हैं। उनके बारे में थोड़ा-बहुत जानकारी दी गई है जो इतिहास सम्मत है जैसे सागल का मिलिंद की राजधानी होना, उसका कला व व्यापार का केन्द्र होना इत्यादि

इसके अलावा कोई भी घटना या चरित्र इतिहास से नहीं उठाया गया है। उपन्यास की नायिका दिव्या से लेकर महत्वपूर्ण चरित्र जैसे मारिश, रुद्रधीर, पृथुसेन इत्यादि पूर्णतः काल्पनिक है तथा इनसे जुड़े घटनाक्रम भी यशपाल की कल्पनाएँ हैं।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

इस प्रकार हम पाते हैं कि यशपाल प्राक्कथन में किए गए अपने दावे पर खरा उतरते हैं तथा कल्पना से ही अत्याधिक के रूपानक की रचना करते हैं। हाँ, यह ज़रूर है कि ऐतिहासिक वातावरण से यथार्थ दिखलाने के प्रयास में इन्हें कुछ ऐतिहासिक सूचित चरित्रों एवं ऐतिहासिक स्थलों का सहारा लेना पड़ा है जो कि उनकी स्वीकारोक्ति के अनुरूप ही है।

अब प्रश्न यह है कि यशपाल ने ऐसा क्यों किया? वस्तुतः यशपाल अपनी रचना से मानववाद तथा मार्क्सवाद जैसे मूल्यों का प्रक्षेपण करना चाहते थे जो कि ऐतिहासिक घटनाक्रम तथा ऐतिहासिक चरित्रों में संभव न था क्योंकि ऐसा करना इतिहास से छेड़छाड़ कहलाता। इसी कारण यशपाल कल्पना के चित्र में इतिहास के रंगों का प्रयोग करते हैं न कि

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias
Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

इतिहास के चित्र पर कल्पना के रंगों से।

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this spa

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

(ख) मैला आँचल की भाषा-शैली की विशिष्टताओं को रेखांकित कीजिये। 15

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मैला आँचल हिन्दी की आंचलिक उपन्यास परम्परा का प्रस्थान बिन्दु है। यह आज तक हिन्दी उपन्यासों के सामने एक सृजनात्मक चुनौती बनकर खड़ा है तो इसका एक कारण इसकी भाषा शैली है।

मैला आँचल की भाषा शैली पर बांग्ला तथा अंग्रेजी उपन्यासकारों का प्रभाव देखा जा सकता है किन्तु जैसी भाषागत प्रयोगशीलता रेणु में देखने को मिलती है वैसी कहीं नहीं।

मैला आँचल की भाषा शैली मूलतः देशज और तद्भव शब्दावली से निर्मित हुई है-

"सास्तर में कहा है- जोरू जमीन जोर का, नहीं तो किसी और का"

कहीं-कहीं तत्समीप्रधान तथा मानक हिन्दी का भी प्रयोग हुआ है. विशेषतः उन प्रसंगों में जहाँ डॉ. प्रशान्त कुछ कहते हैं या सोचते हैं

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

• मैला आँचल की भाषागत विशिष्टता उसमें आंचलिक तेवर के साथ दिखने वाले अंग्रेजी तथा तत्सम शब्दों के कारण है -

भैंसचरमन (Vice chairman), पुलोगराम (Programme)

आचारजजी (आचार्य जी), टीसन (Station)

• बीच-बीच में आने वाले गीत तथा लोकगीत के तत्व भाषायी प्रभाव को और भी गाढ़ा करते हैं।

"याद जो आवे है प्यारी तोहरी सुरतिया से
शाले करेजवा में तीर जी"

• मैला आंचल में अन्तरपाठ्यता (Quote) भी दिखते हैं जिसमें किसी अन्य रचना / कवि के कथन के दुहों का प्रयोग लाया जाता है

बीजक से लछमी के देह की सुगंधी आती है

xxx

पोथी पढ़-पढ़ जग मुआ पंडित भया न कोय ढाई आखर प्रेम का पढ़े सो पंडित होय"

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

• वाक्यांशों में आने वाली स्थानीय शब्दावली से मैला आँचल की आंचलिकता अपेक्षित प्रभाव से उभरती है-

"तहसीलदार साहब की बेटी कमली जब गमकौआ साबुन से नहाने लगती है तो सारा गाँव गमगम करने लगता है।"

• रेणु ने यथास्थान मुहावरे तथा लोकोक्तियों का भी प्रयोग का आंचली प्रयोग किए हैं

"माघ का जाड़ा तो बाघ को भी ठण्डा कर देता है"

मैला आँचल की भाषा पर एक आरोप लगाता है कि यह भाषा उन पाठक के लिए दीवार बनकर खड़ी हो जाती है जो पूर्णिया के आस-पास की बोली नहीं जानता। वस्तुतः यह भाषा शैली आंचलिकता की शर्त भी है क्योंकि इसके बिना आँचल का सम्पूर्ण चित्रण नहीं उभर पाता।

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

दृष्टि The Vision

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

(ग) ''महाभोज' में चित्रित यथार्थ आदर्शोन्मुख यथार्थ है।' इस मत के संदर्भ में 'महाभोज' उपन्यास पर विचार कीजिये। 15

महाभोज स्वतंत्र हो चुके भारत में स्थापित लोकतंत्र तथा राजनीति की विकृतियों की तफ़्तीश से पड़ताल करने वाला उपन्यास है। महाभोज पर एक आरोप लगता है कि यह चरम यथार्थ को उभारने की बजाय आदर्शोन्मुख यथार्थ का रास्ता अपनाता है क्योंकि इसमें समस्याओं के समाधान हेतु एक चरित्र 'कि. सक्सेना' का हृदय परिवर्तन दिखलाया गया है।

~~मि. सक्सेना~~ महाभोज में राजनीतिक मक्कारिता, दोहरा चरित्र, संवेदनहीनता, भ्रष्टाचार, मीडिया का बिकाऊ होना जैसी समस्याओं का तो यथार्थ परक व विश्वसनीय चित्रण हुआ है किन्तु इनके समाधान हेतु जो रास्ता अपनाया गया है वह प्रथम दृष्टया आदर्शोन्मुख यथार्थवादी ज्ञात पड़ता है।

दृष्टि The Vision
641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

मि. सक्सेना आरंभ में एक द्वन्द्व से जूझते हुए मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी के रूप में चित्रित किए गए हैं -

"आज तक वे अपने भीतरी उबाल और बाहरी दबाव के बीच झूले. झूले होकर झूलते रहते आए थे। वे हर बार विरोध को लड़ाई के मैदान तक ले तो ज़रूर गए हैं किंतु जैसे ही गोलियाँ चली है वे उन्हें छोड़कर भाग आए है"

ऐसे व्यक्तित्व के धनी मि. सक्सेना निन्दा की गिरफ्तारी ~~के~~ के बाद अपने 'भय तथा मोह के दायरों' को त्यागकर क्रांति का रास्ता अपनाता हैं तथा निन्दा व निम्मा की लड़ाई को अंजाम तक पहुँचाने का संकल्प लेते है। ~~~~

वस्तुत: इन शब्दों मे मध्यवर्गीय बुद्धिजीवी का व्यक्तित्वांतरण हो जाता है। यह व्यक्तित्वांतरण किसी भी नज़रिए से

641, प्रथम तल, मुखर्जी नगर, दिल्ली-9
दूरभाष : 011-47532596, 8750187501 (+91) 8130392354, 8130392356
ई-मेल: helpline@groupdrishti.com, वेबसाइट: www.drishtiIAS.com
फेसबुक: facebook.com/drishtithevisionfoundation, ट्विटर: twitter.com/drishtiias

Copyright – Drishti The Vision Foundation

कृपया इस स्थान में प्रश्न संख्या के अतिरिक्त कुछ न लिखें।
(Please do not write anything except the question number in this space)

कृपया इस स्थान में कुछ न लिखें।
(Please don't write anything in this space)

थोपा हुआ नहीं लगता क्योंकि लैंगिकता के लिए पर्याप्त परिस्थितियाँ जुटाई हैं। यह व्यक्तिकरण भले ही सहज यथार्थ न लगे किन्तु दुर्लभ यथार्थ के रूप में अवीकरणीय नहीं है।

अतः महाभोज एक आदर्श-रूप यथार्थवादी रचना न होकर एक चरम यथार्थवादी रचना है लेकिन इतना ज़रूर है कि यह चरम यथार्थवाद कुछ बिन्दुओं पर दुर्लभ यथार्थ हो गया है।

Copyright – Drishti The Vision Foundation